The Infinite
An International Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2025
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.in

स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

अमित कुमार सिंह

छात्र, एम.एड.,

माँ खण्डवारी पी.जी. कॉलेज, चहनिया, चन्दौली, उ0प्र0।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

शब्द कुंजी *: शैक्षिक दर्शन, शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन, विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।*

सारांश

स्वामी जी व गांधी जी दोनों ही भारतीय चिंतक हैं। इस लघु शोध में हमने दोनों चिन्तकों के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसमें दोनों चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का विस्तार से वर्णन है। इसमें दोनों चिन्तकों के शैक्षिक विचार का क्या योगदान है? शिक्षा में इसका अध्ययन किया है। आज के परिप्रेक्ष्य में इन दोनों चिन्तकों के विचार जीवन्त बने हुए हैं। स्वामी विवेकानन्द इस युग के पहले भारतीय थे जिन्होंने हमें हमारे देश को आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो। उसे स्वावलम्बी बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सही रूप में मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर प्राप्ति में सफल हो। स्वामी विवेकानन्द जी के विचार को भारत के अतीत एवं वर्तमान के बीच एक बहुत बड़े संयोजक के रूप में माना जाता है।

प्रस्तावना–

स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी भारत के महानतम विचारकों में एक थे, जिनकी शिक्षा और विचारधारा ने न केवल भारत को बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित किया। शिक्षा के प्रति उनकी सोच ने समाज सुधार, आध्यात्मिक जागरुकता और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन आध्यात्मिकता, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। वे शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि उसे आत्मशक्ति और चरित्र निर्माण का साधन मानते थे। उनका

मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शक्ति को जागृत करना है और समाज के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बनाना है।

वहीं महात्मा गांधी की शिक्षा पद्धति सत्य, अहिंसा और स्वावलम्बन पर आधारित थी। उन्होंने नई तालीम नामक शिक्षा प्रणाली विकसित की जिसमें पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर और समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है। दोनों महापुरुषों की शिक्षा न केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन था, बल्कि इसे आत्मोन्नति और समाज सुधार का माध्यम भी माना गया। आज के सन्दर्भ में भी उनकी शिक्षा प्रणाली प्रेरणादायक है और हमें जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन देती है। अर्थात व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास पर अधिक बल दिया। गांधी जी कहते हैं कि 'मैंने सदा आत्मा के विकास को चरित्र के विकास का मूलभूत सिद्धान्त समझा है, इससे ईश्वर के ज्ञान तथा अनुभूति का मार्ग प्रशस्त होता है। आत्मा के उन्नयन के बिना समस्त शिक्षा व्यर्थ है।

स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधी जी का शैक्षिक विचार

गाँधी जी ने मानव को सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी माना जो सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, की साधना से अमरत्व पा सकता है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा केवल आत्मोन्नति का ही साधन नहीं है, वरन वह सत्य को पहचानने और प्राप्त करने का भी साधन है। जीवन का लक्ष्य ईश्वर या सत्य की प्राप्ति है और शिक्षा इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होती है। गाँधी जी सत्याग्रह को भी एक अजेय अस्त्र मानते थे, जिससे अनेक कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है। आदर्शवाद के अनुसार वे भारत में रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे। वे मानव सेवा को ही ईश्वर–सेवा मानते थे। वे मानते थे कि तप, त्याग एवं सेवा ही आत्मानुभूति की प्राप्ति का साधन है। जिनकी साधना कोई भी व्यक्ति अपने अपने समाज में ही रहकर कर सकता है।

आदर्शवादी विचारकों की भाँति गाँधी जी ने व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास पर अर्थात व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास पर अधिक बल दिया। गाँधी जी कहते हैं कि ''मैंने सदा आत्मा के विकास को चरित्र के विकास का मूलभूत सिद्धान्त समझा है, जिससे ईश्वर के ज्ञान तथा अनुभूति का मार्ग प्रशस्त होता है। आत्मा के उन्नयन के बिना समस्त शिक्षा व्यर्थ है।''

यह विचारधारा ज्ञान को प्रमुख मानती हैं। यह भी सत्य है कि वर्तमान समय में ज्ञान कम महत्वपूर्ण नहीं है। आदर्शवादी भौतिक प्रशिक्षण और मानसिक अनुशासन को शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्व देना चाहते हैं। चूंकि स्वामी विवेकानन्द ने अपने विचारों में सत्यम्–शिवम–सुन्दरम् को विशेष स्थान दिया है, इसलिए वे आदर्शवादी विचारधारा के समर्थक माने जा सकते हैं। शिक्षा दर्शन की दूसरी महत्वपूर्ण विचारधारा प्रकृतिवाद है। प्रकृतिवाद को कई अर्थो में देखा जाता है। गाँधी जी आदर्शवादी होते हुए भी एक अर्थ में प्रकृतिवादी थे। वे कृत्रिम जीवन, कृत्रिम संस्था के विरोध में प्राकृतिक एवं ग्रामीण संस्कृति के समर्थक थे और अपनी आवश्यकताएं कम से कम रखना चाहते थे।

प्रकृतिवादी बालक को सर्वाधिक महत्व देते हैं। वे शिक्षा को बालक केन्द्रित करना चाहते हैं। इसी आधार पर स्वामी विवेकानन्द जी ने भी बालकों को शिक्षा का मूल केन्द्र माना है और स्पष्ट किया है कि शिक्षा को बालकों के घर–घर तक पहुँचाया जाय। वे विद्यालयों की स्थापना को महत्वपूर्ण स्थान नहीं देते हैं। प्रकृतिवादियों की एक मान्यता और भी है कि हमें जीवन, प्रकृति समाज और शैशव के प्रति आशावादी होना चाहिए। इसी आधार पर भारतीय परिवेश में यह स्पष्ट किया गया है, कोई भी शिक्षा कभी बेकार नहीं जाती। उसका लाभ कभी–न–कभी मनुष्य को अवश्य मिलता है। स्वामी विवेकानन्द के विचार से पाठशाला का प्रमुख उद्देश्य पढ़ाने जाने वाले विषय पर ध्यान देने के स्थान पर शिशु की आवश्यकताओं, उसके विकास तथा उसके कार्यकलापों पर ध्यान देना चाहिए। प्रकृतिवादी के प्रमुख सिद्धान्त है– ''शिक्षा कभी खत्म नहीं होती और प्रगति अनवरत है।'' शिशु कार्य द्वारा ही सीखता है तथा शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना है। इस आधार पर शिक्षा कार्य का संचालन करना चाहिए।

इस शिक्षा दर्शन के विचार धारा का प्रमुख प्रवर्तक डी.वी. था। जहाँ तक जीवन के शाश्वत पक्ष का प्रश्न है, गाँधी जी के विचारों के बिल्कुल प्रतिकूल प्रयोगवाद का चिन्तन है गाँधी जी शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते थे। सत्य अथवा जीवन के मूल्य गाँधी जी के विचारों के अनुसार परिस्थितियों पर नहीं निर्भर करते। उपयोगिता को जीवन के क्रिया कलापों का आधार बनाना गाँधी जी के चिन्तन में मनुष्य को अधोगति की ओर ले जाना है। किन्तु उपयोगिता आध्यात्मिक अर्थ में गाँधी जी के लिए सार्थक हो सकती है। वास्तव में गाँधी जी निष्काम कर्म के प्रतिपादक थे और परिणामों में फल से किसी कार्य को परिभाषित नहीं करते थे।

स्वामी विवेकानन्द ने अनुभव के सन्दर्भ में कोई भी विचार प्रदान नहीं किया है। जो सही नहीं है, क्योंकि वर्तमान समय में किसी भी क्षेत्र में किये गये कार्य के अनुभव को अधिक महत्व दिया जा रहा है। अनुभववादियों के अनुसार कम शिक्षित मनुष्य अनुभव के आधार पर अधिक शिक्षित मनुष्य से कहीं ज्यादा कुशल बन जाता है।

गाँधी शिक्षा दर्शन की एक महत्वपूर्ण विचारधारा यथार्थवाद है वास्तव में यथार्थवाद कोई स्वतंत्र दर्शन नहीं है, वह भौतिकवाद का ही एक स्वरूप है। यथार्थवाद में सत्य वही है जिसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके विशेष रूप से जो इन्द्रियानुभूति हो सके। गाँधी जी को यथार्थवादी समझते है किन्तु वास्तविकता ऐसा नहीं है क्योंकि गाँधी जी ने उद्योग पर अवश्य बल दिया किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य अर्थोपार्जन नहीं था, बल्कि बालक का सर्वागीण विकास करना था जिसमें आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास विशेष स्थान रखते थे। वे विद्यार्थी के संयम ब्रह्मचर्य की शिक्षा देना चाहते थे, उद्योग केवल माध्यम था।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण विश्व में एक ही सत्ता है और उसी को ब्रह्म कहते हैं। वही सत्ता जब विश्व के मूल में प्रकट होती है तो उसी को ईश्वर कहा जाता है। वहाँ सत्ता जब लघु विश्व अर्थात शरीर के मूल में प्रकट होती है तो आत्मा कहलाती है। सार्वभौम आत्मा जो प्रकृति से परे है प्रकृति के सार्वभौम विकारों से परे है वही ईश्वर परमेश्वर है।

शिक्षा दर्शन की विभिन्न विचार धाराओं के परिप्रेक्ष्य में यह देखा गया है कि गाँधी जी मुख्यतः आध्यात्मवादी दार्शनिक थे। किन्तु उन्होंने जीवन को समग्र रूप में सार्वभौम रूप में देखा था। इसलिए जहां एक ओर वे आध्यात्मवादी जीवन पर बल देते थे, वहीं जीवन की वास्तविकता को ध्यान में रखते थे। इसी कारण उनके आध्यात्मवादी होते हुए भी उन्हें प्रकृतिवादी, प्रयोगवादी और यथार्थवादी समझा जाता है।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों से यह स्पष्ट किया जाता है कि मानव मूल्य क्या है? तथा मानव को सजीव कैसे बनाए रखना चाहिए। इसी के माध्यम से व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का स्वर जगाये रखा जाना चाहिए। जिसका स्वामी विवेकानन्द एवं गाँधी दोनों लोगों ने समर्थन किया है। विवेकानन्द का मानना है कि शिक्षा का काम निरपेक्ष मूल्यों की रक्षा करना है। इस दिशा में बालकों को सर्वप्रथम मातृभाषा की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। तत्पश्चात् बालकों को माता–पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए और हमारी शिक्षा नीति भी ऐसी होनी चाहिए जो केवल वर्तमान का ही नहीं, भविष्य का भी ख्याल रखे।

विचारों में भिन्नता :

गाँधी जी भाषा–विवाद को समाप्त करके मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा में शिक्षा के हिमायती थे। उन्होंने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया। उनका कहना था कि ''भारत को अपनी जलवायु, अपने ही प्राकृतिक–सौन्दर्य और अपने ही साहित्य में फलना–फूलना होगा फिर चाहे कितना ही घटिया वह इंग्लैण्ड के मुकाबले में क्यों न हो।'' गाँधी जी ने अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने का भी समर्थन किया है परन्तु बड़े ही स्पष्ट शब्दो में उनकी घोषणा थी कि ''अंग्रेजी भाषा को उसके अपने स्थान पर रखना मुझे प्रिय है, किन्तु यदि वह ऐसा स्थान हड़प लेती है, जो उसका नहीं है तो मैं उसका कट्र विरोधी हूँ। मै उसे दूसरी वैकल्पिक भाषा का स्थान दे सकता हूँ, वह भी स्कूल की पढ़ाई में नहीं विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम में। यह हमारी मानसिक दासता है कि हम समझते हैं कि अंग्रेजी बिना हमारा काम नहीं चल सकता।'' रूस ने बिना अंग्रेजी के ही वैज्ञानिक प्रगति में ख्याति प्राप्त की है। यद्यपि स्वामी विवेकानन्द जी अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के विरोधी नहीं थे लेकिन उनके समय में अंग्रेजी शासन होने के कारण मातृभाषा के स्थान पर आत्मभाषा का प्रभुत्व बढ़ रहा था। जिसे साधारण लोग नहीं लिख सकते थे। अतः उन्होंने जन साधारण की शिक्षा उनकी मातृभाषा द्वारा ही दी जाने की सिफारिस की। स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दो में ''जन साधारण को उनकी निजी भाषा में शिक्षा दो। उनके सामने विचारों को रखो, वे जानकारी प्राप्त कर लेंगे पर और भी कुछ आवश्यक होगा। उन्हें संस्कृति दो। जब तक तुम उन्हें संस्कृति न दोगे, तब तक उनकी उन्नत दशा कोई स्थायी रूप प्राप्त नहीं कर सकती।''

मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ संस्कृति की शिक्षा भी दी जाये क्योंकि संस्कृत भाषा में हमारे अमूल्य तत्व सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त संस्कृत शब्द की ध्वनि मात्र से हमारी जाति को प्रतिष्ठा, बल और शक्ति प्राप्त होती है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि जन साधारण को संस्कृत भाषा की शिक्षा नहीं दी जायेगी तो उन्हें

प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी, तब एक और जाति पैदा हो जायेगी, जो संस्कृत भाषा जानने के कारण शीघ्र ही औरों के अपेक्षा ऊंची उठ जायेगी।

निष्कर्ष :

अतः कोई भी देश व समाज उसी अनुपात में उन्नति करता है जिस अनुपात में वहाँ के जन–समूह में शिक्षा का प्रसार होता है। इन महापुरुषों का शैक्षिक दर्शन इसीलिए प्रवाहपूर्ण प्रतीत हुआ क्योंकि इनका जीवन दर्शन भी उच्चतम उपलब्धियों से अनुप्राणित था। ये दोनों महापुरुष अपने जीवन–दर्शन के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पक्षों में एक सामंजस्य बनाकर चलते थे। इनका दर्शन वैयक्तिक उपलब्धियों की सीमा से उन्मुक्त था, इसलिए इन लोगों ने सामान्य मानव में ईश्वर व परमसत्ता के दर्शन किये। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जो अतुलनीय कार्य किये उनके लिए सम्पूर्ण शिक्षा जगत इनका सदैव आभारी एवं ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ :

- चट्टोपाध्याय, ए.सी. दत्त एवं धीरेन्द्र मोहन : भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पटना–1994.
- पाण्डेय, डॉ. रामसकल : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा 1995.
- पाण्डेय, संगम लाल : भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिसिंग, इलाहाबाद 1994.
- शर्मा चन्द्रधर : पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2003.
- सिंह, डॉ. शिवभानु : समाज दर्शन का परिचय, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद 1994.
- निगम, शोभा : पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक सर्वेक्षण, मोतीलाल, बनारसी दास दिल्ली, 2005.
- निखिलानन्द स्वामी : विवेकानन्द एक जीवनी, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2016
- मिश्रा : शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009.
- ओड़ एल.के : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008.